Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

भारत में राजनीतिक आधुनिकीकरण

मदन कुमार वर्मा,
एसोसिएट प्रोफेसर उपाधि (पी.जी.) महाविद्यालय, पीलीभीत उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 57-61
Publication Issue :
November-December-2021
Article History
Received : 15 Nov 2021
Published : 30 Nov 2021

मुख्य भाव– विवेक एवं तर्क द्वारा समस्याओं को समझना एवं हल करना राजनीतिक आधुनिकीकरण है। भारत में राजनीतिक आधुनिकीकरण की नीव ब्रिटिश शासन में रखी जिसका विकास स्वतन्त्रता पश्चात् धीरे–धीरे हो रहा है पर भारतीयों की संकीर्ण निष्ठाएं इत्यादि इसके मार्ग में बाधक है।

मुख्य शब्द–विवेक, स्वतन्त्रता, समानता, धर्म निरपेक्षता, संकीर्ण निष्ठा, जाति, शिक्षा, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, परिवहन, संचार।

राजनीतिक आधुनिकीकरण का अर्थ :– राजनीतिक आधुनिकीकरण का अर्थ राजनीतिक समस्याओं को 'विवेक तथा तर्क–वितर्क' द्वारा समझना और हल करना होता है। इसका तात्पर्य ऐसी राजनीतिक व्यवस्था से है जो धर्म या विश्वास के बजाय विवेक पर आधारित है। ल्यूसन पाई ने राजनीतिक आधुनिकीकरण के चार लक्षण बताए हैं।

1. समानता के प्रति एक सामान्य झुकाव जिसके द्वारा नागरिकों को राजनीति में भाग लेने तथा शासन–पदो ंके लिए प्रतियोगिता का समान अवसर दिया जाता है।
2. राजनीतिक तन्त्र में नीतियों को बनाने और उनको कार्यान्वित करने की क्षमता होना।
3. राजनीतिक कार्यो का विभेदीकरण और कार्य विशिष्टीकरण।
4. राजनीतिक प्रक्रिया का धर्म निरपेक्षीकरण।

पाई द्वारा राजनीतिक आधुनिकीकरण के लक्षणों पर विचार करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि समानता, स्वतन्त्रता, कार्य–विशिष्टीकरण तथा धर्म–राजनीति के बीच पृथक्करण राजनीतिक आधुनिकीकरण के आवश्यक तत्व है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भारत के राजनीतिक आधुनिकीकरण को समझने के लिए भारतीय इतिहास को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

1. पूर्व बिट्रिशकालीन भारत
2. बिट्रिश कालीन भारत एवं
3. स्वतन्त्र भारत

1. पूर्व बिट्रिशकालीन भारत में भारतीयों की निष्ठा अत्यंत संकीर्ण थी। वे अपने परिवार, ग्राम व जाति के हितों को प्राथमिकता देते थे। अंग्रेजों के अपने से पूर्व भारतीय समाज स्पष्ट रूप से एक जाति प्रबल समाज था समाज चार प्रमुख वर्गो से विभाजित था जो अलग–अलग जातियों का प्रतिनिधित्व करते थे और इसमें व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण गुणों के आधार पर न होकर उनकी जाति द्वारा होता था। ब्राह्मण सबसे उच्च एवं विशिष्ट वर्ग का समझा जाता था। जिसे धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या करने का अधिकार प्राप्त था। इस परम्परावादी समाज की प्रमुख विशेषता धर्म की प्रधानता थी समाज में धर्म का प्रभाव केवल राजनीति तक ही नहीं सीमित था। बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों तक विस्तृत था अर्थात् भारतीय समय धर्म–निरपेक्ष समाज न था।

ऐसे समाज में शिक्षा अत्यंत सीमित थी शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार मात्र ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों को था शूद्रों को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार न था। परिणामस्वरूप निरक्षरता समाज का महत्वपूर्ण लक्षण था। इस युग में औद्योगिकीकरण का प्रारम्भ न हुआ था। अधिकांश जनता गांवों में निवास करती थी। शहरीकरण का आरम्भ नहीं हुआ था जहां तक न्यायिक कृत्यों का सम्बंध है न तो सभी व्यक्तियों के लिए कानून समान था और न ही सभी व्यक्तियों को न्यायिक मामलों में समान माना जाता था। समानता का सिद्धान्त न माने जाने के कारण पूर्व बिट्रिशकालीन भारत में जन–साधारण को राजनीतिक में भाग लेने का अधिकार न प्राप्त था। राजनीति कार्य एक विशेष वर्ग विशेषतः ब्राह्मणें व क्षत्रियों तक सीमित था।

2. ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के साथ भारत में अंग्रेजों के प्रवेश का पहला चरण था। अंग्रेज व्यापारी बन के आये और धीरे–धीरे यहां की राजनीति में भाग लेना शुरू किया और अंत में देश का शासन बन गये। अंग्रेज अपने साथ नया ज्ञान, नई संस्थाएं, प्रौद्योगिकीरण एवं नए विश्वास, मूल्य तथा मान्यताएं लाए और यह कहना गलत न होगा कि भारत में राजनीतिक आधुनिकीकरण अंग्रेजों के आने से प्रारम्भ हुआ। अंग्रेजों द्वारा भारत का शासन

अपने हाथ में लेने का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि एक केन्द्रीय राजनीतिक सत्ता का उदय हुआ जिससे देश एकीकरण के सूत्र में बंध गया। 1830 में मैकाले ने नई शिक्षा व्यवस्था का प्रारम्भ किया फलस्वरूप अंग्रेजी माध्यम की नई शिक्षा संस्थाओं का उदय हुआ। अभी तक शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार उच्च जातियों को था पर अंग्रेजी शिक्षा समाज के सभी वर्णों व व्यक्तियों के लिए खुली थी। इससे समाज में एक नये वर्ग का उदय हुआ जिसका मानसिक क्षितिज विस्तृत था। अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण करने कारण भारतीयों को यूरोप के वैज्ञानिक विकास का ज्ञान हुआ वे पश्चिमी सभ्यता, संस्कृति, औद्योगिक विकास, आर्थिक व्यवस्था एवं राजनैतिक प्रणाली इत्यादि से परिचित हुए यह अंग्रेजी शिक्षित वर्ग ही भारत में आधुनिकीकरण में सबसे आगे रहा। इस वर्ग ने सामाजिक कुरीतियों के अंत का भारत में आन्दोलन चलाया। सती प्रथा, बाल हत्या आदि।

अंग्रेजों ने यहाँ पर एक नयी प्रशासकीय व्यवस्था को स्थापित किया और एक नई न्याय पद्धति को जन्म दिया भारत में पहली बार दीवानी और फौजदारी संहिता की रचना की गई अवैयक्तिक विधि तथा न्याय के सिद्धान्त को अपनाया गया, कानून के समक्ष समानता और विधिक एकरूपता को मान्यता दी गयी। दंड व्यवस्था में समानता के सिद्धान्त को मानते हुए एक अपराध के लिए सभी व्यक्तियों को एक सा दंड देने की व्यवस्था की गयी। जाति के आधार पर दंड देने की व्यवस्था खत्म हो गयी। प्राचीन भारत में व्यक्ति की हैसियत उसकी जाति के अनुसार निश्चित होती थी बिट्रिश शासन ने इस पद्धति का अंत किया और सामाजिक स्थिति का निर्धारण व्यक्ति की क्षमताओं और निष्पादन के अनुसार किया जाने लगा जिसका आधार जन्म या जाति न होकर अपितु शिक्षा थीं कोई भी व्यक्ति बिना किसी जातीय भेदभाव के उच्चपद प्राप्त कर सकता था। बिट्रिश सरकार ने न केवल संस्थात्मक परिवर्तन किए वरन् नागरिक और राज्य के सम्बन्धों में भी परिवर्तन हुआ वैधानिक रूप से कुछ नागरिक स्वतन्त्रताएं दी गयी। नागरिकों को सभा करने तथा लिखित रूप से अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार प्रदान किया गया। राजनीतिकतन्त्र में सीमित रूप से जन–साधारण को भाग लेने का अवसर मिला। प्रतिनिधिक संस्थाओं की स्थापना की गयी और राजनीतिक दलों का निर्माण हुआ। लोगों को सीमित मताधिकार दिया गया तथा बिट्रिश शासन से मिलती जुलती सरकार की स्थापना भारत में की गयी।

आर्थिक क्षेत्र में औद्योगीकरण के लिए आवश्यक अवसंरचना जैसे परिवहन व संचार के साधनों का विकास हुआ। नये उद्योगों में काम करने हेतु ग्रामीण जनता शहरों में आकर रहने लगी इससे

शहरीकरण शुरू हुआ। संचार व यातायात के साधनों के विकास ने सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में जोड़ दिया। इन सभी ने मिलकर पूरे देश में आधुनिकीकरण का वातावरण उत्पन्न किया।

3. स्वतन्त्रता पश्चात् आधुनिकीकरण की गति तीव्र हो गई और जिस युग का आरम्भ हुआ उस 'सहभागिता' का चरण कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। स्वतन्त्रता पश्चात् गणतन्त्रीय शासन की स्थापना की गयी तथा जन प्रभुत्ता के सिद्धांत को मान्यता दी गयी। सार्वभौम मताधिकार ने जन–साधारण को राजनीति में भाग लेने का अवसर दिया। सामाजिक व राजनीतिक समानता को मान्यता दी गयी, विधि का शासन स्वीकार किया लोगों को मौलिक अधिकार दिया तथा एक धर्म निरपेक्ष राज्य स्थापित किया गया। लोगों को संघ व समुदाय बनाने की स्वतन्त्रता दी गयी जिससे अनेक राजनीतिक संगठनों एवं दबाव समूहों आदि का निर्माण हुआ। विकेन्द्रीकरण के तहत पंचायतों का गठन हुआ जिससे प्रतियोगी राजनीति का आरम्भ ग्रामीण क्षेत्र में भी हुआ।

आर्थिक क्षेत्र में औद्योगिकीरण एवं शहरीकरण के अतिरिक्त आर्थिक समानता लाने का आर्दश अपनाया गया। सामंतवाद का अंत किया गया। श्रमिकों को कारखाने में प्रबंध में प्रतिनिधित्व दिया गया सरकार ने समाजवाद लाने का संकल्प लिया।

इस प्रकार भारतीय संविधान लागू होने के पश्चात् भारत में जो राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन हुए वे राजनीतिक आधुनिकीकरण के आर्दश के अनुसार वे परिणामतः भारत की परम्परावादी राजनीतिक व्यवस्था मूलरूप से बदल गयी तथापि यह पूर्णतः नहीं कहा जा सकता कि वर्तमान भारतीय समाज तथा राजनीतिक व्यवस्था पूर्णरूप से पश्चिमी राजनीतिक तन्त्र के समान ही आधुनिक है। रजनी कोठारी ने इस स्थिति का वर्णन करते हुए भारत को 'जेनस लाइक मॉडल' (JANUS LIKE MODEL) कहाँ है जेनस एक ऐसा समुद्री जानवर होता है जिसके आगे और पीछे दोनों आँखे होती है और वह दोनों ओर एक साथ देखता है। भारतीय राजनीतिक तन्त्र की इस जानवर से उपमा देने का यह अर्थ है कि भारतीय राजनीतिक व्यवस्था न तो पूरी तरह अतीत के सम्बन्ध विच्छेद कर सकी है और न ही पूर्णरूप से आधुनिक ही बन पाई। संक्षेप में भारतीय समाज आधुनिकता और परम्परा का सम्मिमिश्रण प्रस्तुत करता है लेकिन उसमें आधुनिकता के तत्वों की प्रधानता है।

भारत में आधुनिकीकरण के मार्ग में बाधाएं :– भारत के राजनीतिक आधुनिकीकरण के मार्ग में निम्न बाधाएं है।

1. जनसंख्या के एक बड़े भाग का निरक्षर होना विशेष कर स्त्रियों का।
2. जातिवाद, धार्मिक अंधविश्वास एवं संकीर्ण निष्ठाएं।
3. भारतीय राजनीति में क्षेत्रीयतावाद एवं विच्छेदन की प्रवृत्ति।
4. साम्प्रदायिकता की भावना का कुछ दलों द्वारा प्रोत्साहन
5. बढ़ती जनसंख्या
6. राजनीतिक नेतृत्व का परम्परावादी आर्दशों से प्रभावित होना।

विवेचना से स्पष्ट है कि भारत में राजनीतिक आधुनिकीकरण का शुभारम्भ अंग्रेजों के आने के बाद शुरू हुआ क्योंकि पूर्व बिट्रिश काल में राजनीतिक आधुनिकीकरण का अभाव था। बिट्रिश शासन काल में सभी आधुनिकीकरण के मूल्यों एवं संस्थाओं का विकास हुआ तथा स्वतन्त्र भारत में भारतीय संविधान में राजनीतिक आधुनिकीकरण के सभी मूल्यों के समावेश के साथ औद्योगिक एवं आर्थिक विकास पर बल दिया गया। तथापि आज राजनीतिक आधुनिकीकरण के मार्ग में अनेकों बाधाएं हैं ऐसी आशा की जाती है कि शिक्षा के प्रसार, आर्थिक स्थिति में सुधार तथा तथा औद्योगिकीकरण की प्रगति के साथ आधुनिकीकरण की गति तेज होती रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. भारत में राजनीति – कोठारी, रजनी
2. सोशल चेज इन मार्डन इंडिया – श्री निवास, एम0एन0
3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था – सईद डा0 एस0एम0
4. अन्य पत्र–पत्रिकाएं